5.5.2020

कक्षा - सातवीं
विषय - संस्कृत
पाठ - 5

शब्द	-	अर्थ
फलिनः	-	फलदार
वृक्षाः	-	पेड़
गुणिनः	-	गुणी
शुष्कवृक्षाः	-	सूखे पेड़
मूर्खाः	-	मूर्ख
न कदाचन	-	कभी नहीं
यत्र	-	जहाँ
नार्यः	-	स्त्रियाँ
अफलाः	-	फलहीन
तक्षकस्य	-	साँप के
दन्ते	-	दाँत में
मक्षिकाया	-	मक्खी के
वृश्चिकस्य	-	बिच्छू के
पुच्छे	-	पूँछ में
सर्वांगे	-	सब अंगों में
विषम्	-	जहर
प्राज्ञः	-	बुद्धिमान
उत्सृजेत्	-	छोड़ देना चाहिए
सान्मित्रे	-	अच्छा उद्देश्य होने पर
वरम्	-	अच्छा
त्यागः	-	त्याग
शतानि	-	सैकड़ों
तमः	-	अन्धकार
हन्ति	-	दूर करता है
विद्याहीनाः	-	विद्याहीन
निर्गन्धाः	-	सुगंध से रहित
किंशुकाः	-	टेसू के फूल
गते	-	बीते हुए का

Scanned with CamScanner

पाठ-5

शब्द	–	अर्थ
प्रवर्तन्ते	–	व्यवहार करते हैं
विचक्षणा:	–	बुद्धिमान लोग
हेममृगस्य	–	सोने के हिरण का
लुलुभे	–	ललचा गये
विपत्तिकाले	–	आपत्ति के समय

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए –

(क) के कदाचन न नमन्ति ?
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च कदाचन न नमन्ति ।

(ख) कुत्र सर्वाः क्रियाः अफलाः सन्ति ?
यत्र नार्यस्तु न पूजयन्ते, तत्र सर्वाः क्रियाः अफलाः सन्ति ।

(ग) कस्य सर्वांगे विषं विद्यते ?
दुर्जनस्य सर्वांगे विषं विद्यते ।

(घ) प्राज्ञः परार्थे किं किम् उत्सृजेत् ?
प्राज्ञः परार्थे धनानि, जीवितं चैव उत्सृजेत् । [किं-धनानि जीवितं चैव]

(ङ) कीदृशः एकः पुत्रः वरम् ?
गुणी चन्द्र इव एकः पुत्रः वरम् ।

(च) विद्याहीनाः कथं न शोभते ?
विद्याहीनाः निर्गन्धाः इव किंशुकाः न शोभते ।

(छ) विपत्तिकाले धियः कीदृशाः भवन्ति ?
विपत्तिकाले धियः पुंसां मलिनाः भवन्ति ।

Scanned with CamScanner

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) नमन्ति गुणिनो जनाः ।
(ख) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ।
(ग) तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकायाः शिरो विषम् ।
(घ) एकश्चन्द्रः तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च ।
(ङ) गते शोको न कर्तव्यः ।
(च) तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।
(छ) सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशे नियति सति ।

३. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं।
परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।

(ख) स्त्री के बिना धार्मिक क्रिया व्यर्थ है।
नार्य विना धार्मिक क्रियाः अफलाः आस्ते ।

(ग) दुर्जन के पूरे शरीर में विष होता है।
दुर्जनस्य सर्वांगे विषं भवति ।

(घ) दूसरे के लिए धन त्याग देना चाहिए।
परार्थे धनं त्यजेत् ।

(ङ) मूर्ख सौ पुत्र अच्छे नहीं होते हैं।
मूर्खशतान्यपि वरम् न भवन्ति ।

(च) हंसों में बगुला शोभायमान नहीं होता है।
हंसेषु वकः न शोभते ।

(छ) विपत्ति में बुद्धि मैली हो जाती है।
विपत्तकाले धियः मलिनः भवति ।

Scanned with CamScanner

VII गम् धातु रूप , कृ

पाठ 5 सुभाषितानि

श्लोकों का अर्थ -

1. नमन्ति - - - - - - . . कदाचन ।
अर्थ - फलों से युक्त पेड़ झुक जाते हैं, गुणी लोग झुक जाते हैं। लेकिन सूखे पेड़ और मूर्ख लोग कभी नहीं झुकते।

2. यत्र - - - - - - . . . क्रियाः ।
अर्थ जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ इनकी पूजा नहीं होती है, वहाँ सभी क्रियाएं निष्फल हो जाती है।

3. तक्षकस्य - - - - - - - विषम् ।
अर्थ - साँप के दाँत में विष होता है, मक्खी के सिर में विष होता है, बिच्छू की पूंछ में विष होता है, लेकिन दुष्ट व्यक्ति के सभी अंगों में विष होता है।

4. धनानि - - - - - - नियते सति ।
अर्थ - समझदार इंसान को धन और जीवन को दूसरों के लिए छोड़ देना चाहिए। विनाश निश्चित है, उस निमित्त से दूसरों के लिए त्याग करना श्रेष्ठ है।

5. वरमेको - - - - - - - तारागणोऽपि च
अर्थ - गुणी पुत्र एक होना ही श्रेष्ठ है, सैंकड़ों मूर्ख पुत्रों से। जिस प्रकार एक ही चन्द्रमा अंधकार को नष्ट कर देता है न कि तारों का समूह।

6 - रूपयौवनसम्पन्ना - - - - - - - किंशुकाः ।
अर्थ - रूपयौवन से सम्पन्न, विशाल कुल में उत्पन्न हुए, विद्या से हीन होने पर सुगंध रहित टेसू के फूल के समान सुशोभित नहीं होते।